॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

देवं-देवं हुवेम वाजसातये। *(यजु० ३३.९१)*

बल प्राप्ति के लिए हम प्रत्येक देव का आह्वान करते हैं।

वर्ष ३२, अंक २६ **एक प्रति : ३ रुपये**

सोमवार २२ जून, २००९ से २८ जून, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

गुरुकुल कांगड़ी की पुण्य भूमि हस्तान्तरित करने का षड़यन्त्र

आर्यजनता में व्यापक रोष : कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार सन्देह के घेरे में

स्वामी श्रद्धानन्द की तपोसिंचित भूमि को आर्यसमाज के हाथों से जाने न देंगे – आचार्य बलदेव

कुत्सित प्रयास को नहीं रोका गया तो होगा जबरदस्त आन्दोलन – ब्र. राजसिंह आर्य

उच्चस्तरीय प्रतिनिधि मंडल शीघ्र ही जाएगा हरिद्वार

एकड़ों में फैली ऐतिहासिक पुण्य भूमि पर बना गुरुकुल भवन।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के तप से सिंचित भूमि को किसी भी हालात में आर्यसमाज से पृथक नहीं होने देंगे। इस कुकृत्य की योजना बनाने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही एवं आन्दोलन होगा। यह भूमि आर्यसमाज के लिए प्राण के सामान है। जिस भूमि पर लम्बे समय तक गुरुकुल का संचालन हुआ आज उस पर यदि गुरुकुल प्रशासन अच्छी योजना बनाकर प्रयोग न कर सके तो उसके हस्तांतरण का अधिकार किसी को भी नहीं है। ऐसे घृणित उद्देश्य को लेकर कार्य करने वालों के मंसूबों को किसी हालात में भी पूर्ण नहीं होने देंगे। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने दिल्ली में आयोजित सार्वदेशिक सभा की बैठक के बाद संयुक्त वक्तव्य में दिए।

हम आर्यजनता को बताना चाहेंगे कि गुरुकुल कांगड़ी की पुरानी भूमि, जिसे पुण्य भूमि के नाम से जाना जाता है, तथा वह कांगड़ी गांव में स्थित है, को आर्यसमाज से पृथक कर उसे किसी और को हस्तांतरित करने का मामला सामने आया है। यह एक पूर्व नियोजित षड़यन्त्र है जिसे वर्तमान कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने अमली जामा पहनाने की कोशिश की है। ऐसा करना एक जघन्य अपराध होगा जिसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकेगा। इसी षड़यन्त्र के खिलाफ सार्वदेशिक सभा की बैठक में विशेष चर्चा हुई, उसके पश्चात् इस विषय पर आचार्य बलदेव जी एवं ब. राजसिंह आर्य जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

उन्होंने आगे कहा कि गुरुकुल

– शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पूर्ण देश के माथे से गोहत्या के कलंक को मिटाने के लिए

राष्ट्रीय गोरक्षा महासम्मेलन

सोमवार 6 जुलाई, 09 **प्रातः 10 से 1 बजे तक** **जन्तर मन्तर, नई दिल्ली**

सृष्टि में मनुष्य सर्वोत्तम प्राणी माना जाता हैं। धरती पर मनुष्य को मनुष्य तथा मनुष्य से देवता बनाने वाला केवलमात्र साधन गोमाता है। सम्पूर्ण राष्ट्र से भी ऋषि का मूल्य अधिक होता है। परन्तु गाय का मूल्य ऋषि से भी अधिक है। ऋषि का निर्माण करने में गाय ही समर्थ है। इसलिये कहा है कि देश धर्म का नाता है, गौ हमारी माता है। गाय बचेगी–देश बचेगा। प्राचीन काल में गोपूजा होती थी। 33 करोड़ देशवासी देश में रहते थे, इसलिये गोमाता में 33 करोड़ देवताओं का वास माना जाता है। "विद्वांसो वै देवा: " अर्थात विद्वानों को देवता कहते हैं। वे सब देवता गौ द्वारा ही निर्मित थे। वर्तमान में गाय के तिरस्कार के कारण पवित्र देवताओं के देश में राक्षस भ्रष्ट चरित्रहीनों का बोलबाला है। अतः गोभक्तों को सर्वस्व न्यौछावर करके भी गोहत्या का कलंक देश के मस्तक से समाप्त करना चाहिये।

5 अप्रैल, 2009 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी अन्तरंग सभा आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, दिल्ली में गोहत्या के कलंक को समाप्त करने हेतु प्रस्ताव पास कर दिया है। हरयाणा राज्य गोशाला संघ ने समर्थन करते हुये आन्दोलन चलाने का उत्तरदायित्व अपने हाथ में ले लिया है। देश की सभी गोशालाओं , आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान व मन्त्री सम्बन्धित संस्थाओं में प्रस्ताव पास करके अधिक से अधिक प्रचार सम्मेलन करें। अन्य गोभक्त भी आन्दोलन को चलायें तथा अधिक संख्या में पधारें। देश में गोहत्या होती रहे हम गोभक्त जीवित रहें सहन नहीं होता। मृत्यु या गोहत्या बन्द। यह निश्चय करना पड़ेगा । गोहत्या को बन्द करने हेतु आहुत नेता या पार्टी को वोट देने की दृढ़ धारणा बनायें। सर्वस्व न्यौछावर करके गोहत्या बन्द करने पर ही ऋषि मुनियों का भारत बनेगा।

प्रस्ताव : 1. सम्पूर्ण देश में गोहत्या का कलंक बन्द हो। 2. गोचर भूमि से कब्जा हटाकर गोचर भूमि गोशालाओं को दी जाये। 3. देश की सभी गोशालाओं को 50 रुपये प्रति गाय प्रतिदिन के हिसाब से ग्राण्ट दी जाये।

– आचार्य बलदेव, प्रधान, हरयाणा राज्य गोशाला संघ, दयानन्दमठ रोहतक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

वार्षिक साधारण अधिवेशन

रविवार 28 जून, 2009

प्रातः 11.00 बजे

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001

समस्त सम्बन्धित आर्य समाजों के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि समय पर पहुंचकर सहयोग प्रदान करें।

– विनय आर्य, महामन्त्री,
मो. 9350204466

दर्शन व्याख्या - 12

न्याय शास्त्र के द्विविध प्रकार एवं प्राचीन न्याय

गतांक से आगे :–

कतिपय अन्य ग्रंथः – उपरिलिखित विवेचन से यह स्पष्ट है कि आचार्य महर्षि गौतम के 'न्याय दर्शन' पर वात्स्यायन के भाष्य के उपरान्त टीकाओं – व्याख्याओं एवं आक्षेप–समाधानों का युग प्रारंभ हुआ और ईसा की दसवीं शताब्दी तक यह कम अनवरत गति से प्रवहमान रहा, किन्तु आचार्य उदयन के पश्चात यह कम मन्द पड़ गया। इस दिशा में कालान्तर में जो छिट–पुट प्रयास हुए उनमें आचार्य उदयन की न्याय 'कुसुमांजलि' पर तेरहवी शताब्दी में वर्धमान ने 'न्याय निबंध प्रकाश' नामक टीका लिखी। इस टीका पर आचार्य पद्मनाभ ने 'वध् मानेन्दु' नामक टीका तथा शंकर मिश्र ने 'न्याय तात्पर्य मण्डन' नामक उप–टीका की रचना की। 'विश्व नाथ वृत्ति' के नाम से जहाँ आचार्य विश्वनाथ ने न्याय सूत्रों पर अपनी वृत्ति लिखी, वहां कतिपय अन्य ग्रंथों की भी रचना हुई।

नव्य न्यायः तेरहवी शताब्दी से नव्य न्याय का प्रचलन हुआ। नव्य न्याय के प्रवर्तक हैं मिथिला के श्री गंगेश उपाध्याय और उनका एतद्विषयक सुप्रसिद्ध ग्रंथ है 'तत्व चिन्तामणि'। इस ग्रंथ में नव्य न्याय की भाषा एवं शैली देखने को मिलती है। महर्षि गौतम के 'न्याय दर्शन' के सूत्रों पर भाष्य या टीका लिखने के बजाए श्री गंगेश उपाध्याय ने 'तत्व चिन्तामणि' में प्रमाणों (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्दादि) की अभिनव शैली में विवेचना की है। और 'नव्य न्याय' को प्रमाण शास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित किया है। जबकि 'प्राचीन न्याय' पदार्थ शास्त्र के रूप में सुप्रतिष्ठित था। नव्य न्याय की प्राचीन न्याय से व्यावर्तक एक और विशेषता है भाषा की क्लिष्टता। इस न्याय में अवच्छेदक–अवछिन्नता आदि क्लिष्ट शब्दों का बाहुल्य है। इस न्याय का विशेष प्रचार–प्रसार बंगाल में हुआ।

कालान्तर में नव्य न्याय पर टीकाओं का क्रम प्रारम्भ हुआ। सोलहवीं शती में श्री रघुनाथ शिरोमणि ने 'तत्वचिन्तामणि' पर 'दीधिति' नामक टीका लिखी, जो पर्याप्त प्रसिद्ध हुई। 'तत्वचिन्तामणि' और 'दीधिति' पर श्री मथुरानाथ ने 'गूढार्थ प्रकाशिनी रहस्य' नामक टीका –ग्रंथ की रचना 16वीं शताब्दी में की। 17वीं शताब्दी में श्री जगदीश भट्टाचार्य ने दो ग्रन्थों की रचना की जिनमें से एक है 'जागदीशी' जो 'दीधिति' की प्रामाणिक टीका मानी जाती है। उनके दूसरे ग्रंथ का शीर्षक है 'शब्द शक्ति प्रकाशिका' यह निबंधात्मक रचना शब्द शक्तियों पर नव्य न्याय की दृष्टि से अच्छा विचार करती है। सत्रहवी शती के नव्य न्याय के एक अन्य विद्वान् श्री गदाधर भट्टाचार्य ने 'दीधिति' पर 'गादाधरी' नामक टीका लिखी है। इसमें 'दीधिति' की विस्तृत व्याख्या है। 'गादाधरी' के अतिरिक्त श्री भट्टाचार्य ने नव्य न्याय को समझाने के लिए 'व्युत्पत्तिवाद', शक्तिवाद आदि ग्रंथों की रचना भी की है। संक्षेप में नव्य न्याय का मूल ग्रंथ है 'तत्वचिन्तामणि' और इसकी विस्तृत और प्रामाणिक टीका है 'दीधिति' जिसको व्याख्यायित करने की अनेक परवर्ती नव्य नैयायिकों ने चेष्टा की हैं।

– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्), बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058

क्रमशः

देववाणी : संस्कृत

ब्रह्मः समश्नुते ब्रह्मैव इति विमर्शः

गतांकेन क्रमशः

यः तु सदा विज्ञान युक्तेन मनसा भवति तस्य इन्द्रियाणि सारथेः अश्वाः इव वश्यानि भवन्ति किन्तु यः सदा अविज्ञानवान् अमनस्क अशुचिः भवति सः तत्पदम् न आप्नोति संसारम् चाधिगच्छति किन्तु विज्ञानवान्, तत्पदम् आप्नोति यस्मात् पुनः न जायते। ब्रह्मणः परं न किञ्चिदस्ति यतः अस्य सम्पूर्णविश्वस्य अभिन्न निमित्तोपादान कारणं –'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तदेवब्रह्मजननीरूपेण वर्णयति यमः–

"या प्राणेन संभवति अदितिर्देवतामयी।
गुहाम् प्रविश्य तिष्ठन्तीं या भूतेभिर्व्यजायत। एतद्वैतत्।"

कठोपनिषद् 2/1/7

यतः सूर्य उदेति यत्र च अस्तम् गच्छति सर्वे देवाः तम् अर्पिताः तम् इव धूरहितो भवति। यथोदकं शुद्धे प्रक्षिप्तं जलं तादृगेव शुद्धं भवति नान्यथा, तथैव आत्मा।

अवक्रेचसः अजस्य पुरः एकादशद्वारम् अस्ति समभावनया परिपूर्णः स राज्ञः रूपेण अत्र निवसति। इदम् गुह्यरहस्यं ज्ञात्वा यः तेन साक्षात्कारं करोति सः न कदापि शोच्यो भवति।

ततः यमः सर्वव्यापकतां सर्वत्रगतिं च वर्णयित्वा तस्य वास्तविकप्रश्नस्य उत्तरं ददौ यत् देहिनः देहात् विमुच्यमानस्य अत्र किम् परिशिष्यते? अर्थात मृत्योरन्तरं आत्मा कुत्र गच्छति–

"योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः।
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म यथाश्रुतम्।। " *कठोपनिषद 2/2/7*

ततः सः तस्मै यत्प्रतिज्ञातं तत् गुह्यम् ब्रह्म अवदत् – यः कामम्कामम् निर्मिमाणः पुरुषः सुप्तेषु जागर्ति तत् एव शुद्धं तत्वं तत् एव ब्रह्म, नान्यद् गुह्यम् ब्रह्मास्ति तदेव अमृतम् उच्यते तस्मिन् सर्वे लोकाः आश्रिताः। तदु नात्येति कश्चन। सूर्यवाय्वग्नीनाम् सदृशं सर्वत्र व्याप्तः, जीवानाम् कर्मफलस्य विधायकः, यः नित्यानाम् नित्यः, चेतनानाम् चेतनः, एकः बहूनाम्, कामान् विदधाति, तम् आत्मस्थम् ये धीराः अनुपश्यन्ति तेषाम् शाश्वती शान्तिः, इतरेषाम् न।

– डॉ० मिताली देवः, संस्कृत विभाग, महिला महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ०प्र०)

क्रमशः

Questions & Answers

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q.: Regarding Idol worship in Hinduism, it seems that Hindus do not worship idol, they worship God through an idol. Not everybody is equally intelligent/ strong.So they use various kinds of tools to experience God. Hindus believe God is everywhere; therefore they are not idol worshippers. Idol of God is meant to help the human mind that need to focus on a name and a form for support. So human has choice to experience God as Nirgun-Nirakara, Saguna-Nirakara, and Saguna-Sakara. Ultimately motive and objective is the same - obtaining blessings of God. It seems okay to worship God through forms, symbols, names (mantras) and idols (murtis). If devotee's intentions are practical and not false belief that God is inside Idol or in Temple only. Not everyone is blessed with true spiritual gurus, and lucky to obtain real knowledge of supreme lord AUM. Your views please.. **Vikas L. Acharya**

Ans.: God's worship is in Vedas which emanate direct from God, wherein idol worship is not mentioned. I have previously quoted several examples that idol worship is not required. For-example you know me and I also know you, we both reside in bodies. Being souls and souls are also shapeless. So we know each other, but how? Only on the basis of qualities and not on the basis of statue/photos etc. If you or I will try hard then we can also meet together. This is worldly example. So on the basis of the qualities of the God as mentioned in Vedas, God is known and when an aspirant follows/ obeys the path of Vedas i.e., worship, ashtang yoga practice, listening of Vedas, yagya etc., under guidance of an acharya, then he attians samadhi i.e., realizes God too. So, as per Vedas. There is no need of idol worship/ through an idol/non- intelligenctly/self-made various kinds of tools etc.

If someone believe that God is everywhere why he avoid drinking, smoking, theft, etc. in temple and does outside? Actually realization is subject of deep study of Vedas. Sagunn sakar means with eternal qualities mentioned in Ved mantras. Like formless. omnipresent, etc.and nirakar means shapeless. One can not break the rules and regulations of God mentioned in Vedas. Vedas are self-proof and cannot be denied. ***To be continued....***

बोध कथा

आनन्द की खोज

– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

एक कुत्ता कई दिनों से भूखा था। खाना खोजता फिरता था। चलते चलते वह एक नदी के पास पहुँचा। तट पर एक वृक्ष था। वृक्ष पर पत्ते नहीं थे, केवल शाखाएँ थीं। उनमें से एक शाखा पर एक रोटी लटक रही थी। वृक्ष का और रोटी का प्रतिबिम्ब पानी में पड़ रहा था। कुत्ते ने पानी की ओर देखा। समझा– सामने रोटी है । उसने छलाँग लगा दी। पानी हिला तो रोटी परे जाती प्रतीत हुई। वह और आगे बढ़ा तो रोटी और आगे जाती विदित हुई। इस प्रकार वह बार–बार आगे बढ़ता, बार–बार रोटी आगे बढ़ जाती। अन्त में, मँझधार में पहुँचा; डूबा और समाप्त हो गया।

अरे मनुष्य ! तू भी तो भूखा फिरता है। जन्म जन्म से आनन्द की प्यास तेरे चित्त में है। इसको खोजा फिरता है। तूने सोचा– जिसके पास धन है, वह सुखी है। और मार दी धन के पानी में छलाँग, किन्तु आनन्द तो मिला नहीं, आनन्द की रोटी आगे हो गई।

तूने सोचा कि विवाह में सुख है। पकी–पकाई रोटी मिल जाती है, सुख और शांति मिल जाती है। लगा दी छलाँग विवाह के जल में, किन्तु सुख तो मिला नहीं। आनन्द की रोटी और आगे हो गई।

तूने सोचा कि आनन्द सन्तान में है। तूने लगा दी छलाँग । पानी फिर हिल गया। रोटी और आगे हो गई।

इस प्रकार मान–सम्मान में, शासन में, मकान में, सम्पत्ति में कहीं भी आनन्द नहीं। अरे छलाँग लगाना चाहते हो तो लगाओ, किन्तु आनन्द की रोटी मिलेगी नहीं। कुत्ते में यदि बुद्धि होती तो वह पानी में छलाँग लगाने के स्थान पर निहारता ऊपर की ओर। वृक्ष पर चढ़ने का प्रयत्न करता, रोटी मिल जाती।

अरे मनुष्य! आनन्द की रोटी नीचे नहीं, वृक्ष के ऊपर है। आनन्द की इच्छा है तो ऊपर चढ़ो, नीचे मत गिरो!

गतांक से आगे

मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद के सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध सन्तों के विचार - 2

"मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद केवल वेद–विरुद्ध ही नहीं, तर्क और बुद्धिगम्य भी नहीं है। इतना ही नहीं, हमारे आध्यात्मिक,सामाजिक, तथा बौद्धिक विकास में भी वे बाधक हैं, इस बात का प्रतिपादन न केवल ऋषि दयानन्द ने अपितु उनसे पूर्व पैदा हुऐ भारत के अनेक प्रसिद्ध भक्त,सन्त तथा कवियों ने भी किया है।" विद्वान् लेखक स्व. आचार्य भद्रसेन जी ने यही बात इस लेख में बड़े सुन्दर ढ़ंग से बताई है।

आचार्य भद्रसेन जी सार्वदेशिक सभा के प्रधान कै. देवरत्न आर्य जी के पूज्य पिता हैं। –सम्पादक

3.श्री योगीराज महात्मा ज्ञानेश्वर जी

इसी प्रकार महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत ज्ञानेश्वर जी ने भी मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद दोनों का बड़ा प्रबल खण्डन किया है–

13वीं सदी में महाराष्ट्र प्रान्त में श्री ज्ञानेश्वर जी एक उच्च कोटि के महात्मा तथा योगीराज हुये हैं। जिनको कि तुकाराम जी सरीखे महात्मा भी अपना गुरु तथा पूजनीय मानते थे। उन्होंने ओवी नाम की महाराष्ट्रीय कविता में श्रीमद्भगवदगीता का एक बहुत अपूर्व ही भाष्य लिखा है। भाष्य क्या है, मानों उन्होंने अपने सारे योगसमाधि द्वारा प्राप्त किये अनुभवों को ही एकत्रित कर दिया है। गीता के रहस्य को जितना उपर्युक्त महात्मा ने खोला है उतना शायद ही किसी अन्य भाष्यकार ने खोला हो। इसीलिए महाराष्ट्र के बड़े–बड़े विद्वानों ने उपर्युक्त ज्ञानेश्वर जी के गीताभाष्य के जिसको कि ज्ञानेश्वरी के नाम से पुकारते हैं, मराठी में अनुवाद किये हैं। इतना ही नहीं, अपितु उपर्युक्त पुस्तक का अनुवाद गुजराती, नागरी आदि कई दूसरी भाषाओं में भी हो चुका है। श्री ज्ञानेश्वरजी ने उपर्युक्त अपने ज्ञानेश्वरी नाम के गीताभाष्य के अध्याय 9,श्लोक 11 के भाष्य में मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद का इतने जोरदार शब्दों में खण्डन किया है कि यदि पाठक उस श्लोक के सारे भाष्य को देखेंगे तो चकित रह जायेंगे। हम पाठकों के सम्मुख उपर्युक्त भाष्य के उच्च उद्धरणों को रखते हैं।

तैसा कृत निश्चय वाया गेला। जैसा कोंणही एक कांजी प्याला। मग परिणाम पाहों लागला। अमृताचा।।1।।

तैसा स्थूलाकारी नाशिवन्ते। भरवंसा बान्धोंनि चित्तें। पाहती मज अविनाशान्ते। तरीकैचा दिसे।।2।।

अगाकई पश्चिम समुद्राचियातटा। निगिजते आहे पूवीलिया बाटा। को कोंडा कांडितां सुभटा। कणा जोडे।।3।।

तैसेंविकारले हे स्थलव। जाणित लेया भी जणावतसे केवल। काई फेणपीताज्ज्ल सेविले होय।।4।।

म्हणोनि मोहिलेनि मनों धर्मे। हाचिभीनूनि सम्भ्रमें। मज येथिंची जिये जन्म कर्मे। तियें मजचिन्हणती।।5।।

येतु लेनि अनामा नाम। मज अक्रियासि कर्म। विदेहासि देह धर्म। अरोपिती।।6।।

मज आकार शून्या आकार निरूपाधि चा उपचार। मजविधि वर्जिता व्यवहार। अचारा दिक।।7।।

गज वर्ण हीना वर्ण। गुणातीतासि गुण। मज अचरणं चरण। अपाणि या पाणी।।8।।

मज अमेया मान। सर्वगतासी स्थान। जैसे सेजे माजीवन। निदेला देखे।।9।।

तैसे अश्रवण श्रोत्र। मज अचक्षसी नेत्रा अगोत्रा गोत्र। अरूपा रूप।।10।।

मज अव्यक्तासि व्यक्त। अनार्तासी आर्ती। स्वयं तृप्ता तृप्ती। भावितीगा।11

मज अनावरण अवरण। भूषणतीतासि भूषण।मज सकल कारणा कारणा देखतीते।।12।।

मज हसजातें करिती। स्वयं भात प्रतिष्ठती। निन्तराते आहवानिति पिार्जितीगा।।13।।

मी सर्वदा स्वतः सिद्ध तोकी बाल तरूण वृद्धा मज सर्वान्तरातें काल्पिती आरेमीत्रगा। मी सर्वदा स्वतः सिद्ध तोकी बाल तरूण वृद्धा मज एकरूपा सम्बन्ध जाणती ऐसे।।14।।

मज अद्धेंतासि काजें। मी अभोक्ता की भुंजें। ऐसे ग्हणती।।15।।

मज अकुलाचे कुल वाणिती। मज नित्याचें निधनें शिणती। गज सर्वान्तरों कल्पिती आरेमित्रगा।।16।।

मीं वानन्दाभिराम। तथा मज अनेक सुखाचा काम। अवर्धाच मी असें सम। कीं म्हणती एक देशी।।17।।

मीं आत्मा एक चराचरी। म्हणती एकाची के पक्षकारी। आणि कोपोनि एकातें मारी। हेचि रूढाविती।।18।।

कि बहुना ऐसे समस्त। हे मनुष्य धर्म प्राकृत। त्योचि नाच भी ऐसे विपरीत। ज्ञान वयाचें।।19।।

जब आकार एक पुढा देखती। तब हो देव येणें भावें भजती। मग तोचि बिगडलिया। टांकिती नहीं म्हणोनि।

ज्ञानेश्वरी अं 9 श्लोक 11।।

अब हम श्री ज्ञानेश्वरी के उपर्युक्त उद्धरण का भाषा भावार्थ पाठकों के सम्मुख उपस्थित करते हैं।

भावार्थ:– जैसे कोई मनुष्य काजी पीकर अमृत का परिणाम अपने अन्दर देखने लगे, जैसा उसका उपर्युक्त निश्चय व्यर्थ जाता है उसी प्रकार जो मनुष्य परमेश्वर को नाशवान् स्थूलाकार (मूर्ति आदि) में विश्वास करके उसी में उसे देखने लगे तो भला बतलाओ वे ईश्वर उसे उस मूर्ति आदि में कैसा दिख सकता है? जैसे समुद्र के किनारे पर बिछे हुए कूड़े और काई में से कोई मनुष्य अन्न के दाने ढूंढने लगे तो क्या उसे उस काई में दाने मिल जायेंगे? उसी प्रकार जो मनुष्य इस बनने–बिगड़ने वाले विकृत स्थूल आकार को ही 'यह ईश्वर है' ऐसा समझ कर उनके जन्म–कर्मों को भी ईश्वर के ही कर्म समझते हैं। उस नाम रूप से रहित परमेश्वर के राम कृष्ण आदि नाम रखते हैं। उस सांसारिक कर्मों से सर्वथा रहित परमेश्वर के (माखन चुराना आदि) कर्म बतलाते हैं। उस देह रहित परमेश्वर पर देह धर्मो का आरोप बतलाते हैं। उस निरंजन प्रभु के अनेक प्रकार के उपचार करते हैं। विधि–निषेध से रहित ईश्वर के नाना प्रकार के आचार –व्यवहारों की कल्पना करते हैं। उस रूप रंग से रहित परमेश्वर का रंग, गुणातीत के गुण, बिना पावों वाले के पांव, बिना हाथ वाले के हाथ, अपरिमित का परिमाण, सर्वव्यापक का (अयोध्या, मथुरा आदि) स्थान, कानों से रहित के कान, नेत्र रहित के नेत्र, अगोत्र के (रघु, यदु आदि) गोत्र। अरूप का रूप, अव्यक्त की व्यक्ति। अनार्त्त की आर्ती, स्वयं तृप्त की तृप्ति, आवरण से रहित का आवरण, भूषण से रहित के भूषण, सकल जगत् के कारण के भी कारण की कल्पना करते तथा जानते हैं। ये मूर्तिपूजक लोग स्वयंसिद्ध प्रभु को अपने हाथ से बनाते, उस सदातृप्त के सामने भात आदि रखते, जो प्रभु सब जगह निरन्तर रम रहा है उसका आवाहन तथा विसर्जन तक भी करते हैं। स्वयंसिद्ध, निर्विकार प्रभु की बालक, युवा, वृद्ध आदि अवस्थाओं को मानते हैं। ये लोग उस एक अद्वैत प्रभु को दो–तीन (यहां तक कि चौबीस तक) बतलाते हैं। सांसारिक विषयों का भोग करने वाला बतलाते हैं। उस सर्वान्तर्यामी के दुश्मन और मित्र की कल्पना करते हैं। उस अपने आनन्दस्वरूप में ही रमण करने वाले प्रभु को अनेक प्रकार के सांसारिक सुखों के भोग करने वाला बतलाते हैं। ये लोग सब जगह एक रस भरे हुए प्रभु को एकदेशी बतलाते हैं। चराचर में रमे हुए सब को पुत्र समझने वाले उस परमेश्वर के संबंध में भी ये लोग ऐसा फैलाते हैं कि उसने किसी की तो तरफदारी की और किसी पर गुस्सा करके उसे मार डाला।

आगे श्री ज्ञानेश्वर जी कहते हैं– मैं अधिक क्या कहूं?

ये लोग जब भी कोई सामने आकृति तस्वीर या मूर्ति आदि देखते हैं तब ही 'ये ईश्वर है' ऐसा समझ उसकी पूजा करने लग जाते हैं। किन्तु यही समझकर उसी वक्त फेंक देते हैं। अर्थात् पहले तो यह मूर्ति आदि जड़ पदार्थों को ईश्वर समझकर उसकी पूजा करते हैं और उसी मूर्ति के टूट जाने पर उसको अपने हाथों ही कूड़े–कचड़े में फेंक उसका अपमान करते हैं। भला इससे बढ़कर और अज्ञान क्या होगा!

पाठक वृन्द देखें कि आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व पैदा हुए श्री महात्मा ज्ञानेश्वर जी महाराज ने मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद का कितने स्पष्ट शब्दों में खण्डन किया है। और उपर्युक्त गीता के श्लोक का सही अर्थ किया है जैसा कि आर्यविद्वान् करते हैं। जो पौराणिक विद्वान् यह कहा करते हैं कि इस श्लोक का यह अर्थ है कि मूढ लोग ईश्वर को मनुष्य–देह धारण करने वाले मानते हैं, सिवाय आर्य समाज के आज तक और किसी भी गीता के टीकाकार ने नहीं किया, उनको श्री ज्ञानेश्वर जी के श्लोक का भाष्य ध्यान से देखना चाहिए। आगे चलकर तो श्री ज्ञानेश्वर जी ने इस श्लोक का अर्थ स्पष्ट ही लिख दिया है–"मातें येणे येणे प्रकारेन जाणती मनुष्य ऐसे नि आकारे" अर्थात् ये अज्ञानी लोग मुझे इस प्रकार से मनुष्य आकार वाला ही समझते हैं।

– क्रमशः

ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (38)

संबंधानुपपत्तेश्च ।।38।।

अर्थ– (संबंधानुपपत्तेः) संबंध के सिद्ध न होने से (च) भी। संबंध के सिद्ध न होने से भी जगत् के स्वामी ब्रह्म का शरीरधारी होना असंगत है।

भावार्थ – शास्त्रों के अनुसार जगत् के सभी पदार्थ और जीव व्याप्य हैं, ब्रह्म उन सबमें व्यापक है। यदि ब्रह्म को शरीरधारी मान लिया जाए तो इस प्रकार का व्याप्य व्यापक संबंध नहीं सिद्ध हो सकता। यह बात तभी सिद्ध हो सकती है, यदि ईश्वर को देहधारी न माना जाए। किसी देहधारी का संसार के सब पदार्थों और जीवों में व्यापक होना असंभव है।

शास्त्रों में ब्रह्म को सम्पूर्ण जगत् का संचालक और नियन्ता कहा गया है। यदि उसे शरीर वाला माना जाए तो वह किसी एक देश (स्थान) में अवस्थित रह सकता है। अतः वह सारे जगत् का नियन्ता कदापि नहीं हो सकता, क्योंकि एक देशीय होने के कारण शरीरधारी का सीमित क्षेत्र पर ही नियंत्रण हो सकता है। ऐसी स्थिति में न तो ब्रह्म अनन्त विश्व का संचालन कर सकेगा और न ही अनन्त जीवात्माओं के कर्मों के फल आदि पर नियंत्रण कर सकेगा। इस प्रकार ब्रह्म को शरीर वाला या देहधारी मान लेने पर व्याप्य व्यापक संबंध और नियम्य नियन्ता संबंध सिद्ध नहीं हो सकते। शरीरधारी से इन संबंधों के सिद्ध न हो सकने के कारण ब्रह्म को शरीरधारी मानना किसी भी प्रकार उचित नहीं है।

– सूत्रकार इसी तथ्य की पुष्टि में एक अन्य हेतु अगले सूत्र में प्रस्तुत करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'
सी–2ए/90 जनकपुरी,नई दिल्ली–58

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

गुरु-शिष्य के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

6, 7, 8 नवम्बर, 2009 : मथुरा

उद्घाटन : 6 नवम्बर, 2009 प्रात: 10 बजे

मुख्य अतिथि :महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील

19वीं सदी के महान सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा ग्राम में हुआ। विरक्ति होने पर घर परित्याग के बाद निरन्तर 13 वर्षों तक भारतवर्ष के विभिन्न दुर्गम तीर्थस्थलों में भ्रमण करते रहे, परन्तु सच्चे शिव के दर्शन करवाने वाला योग्य गुरु नहीं मिला। अन्त में 4 नवम्बर बुधवार (कार्तिक शुक्ल 2) सन् 1860 को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पावन नगरी मथुरा में वेद और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती की कुटिया का द्वार खटखटाया और श्रीचरणों में रहकर शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की।

मथुरा में महान् गुरु और महान शिष्य के प्रथम मिलन का 150वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। आर्यजगत के लिए यह गौरवशाली, प्रेरणादायक वर्ष है। आर्यों ने इस अवसर पर 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय किया है। 8 नवम्बर को महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी रामदेव जी करेंगे। **आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर प्रथम मिलन के 150वें वर्ष को एक यादगार के रूप में अपने हृदयों में अंकित करें।**

–:आयोजक :–

गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा (उ.प्र.)

Email : virjanandtrust@yahoo.in, virjanandtrust@gmail.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर

आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के लिए, युवाओं को साथ जोड़ने के लिए, देश और समाज में पुन: वैदिक मान्यताओं के प्रचार के लिए, देश–भक्त और महर्षि मिशन के सिपाही तैयार करने के लिए, भारतीय जनमानस को पुन: झकझोरने के लिए विशेष रूप से तैयार की गई फिल्म

"सत्य की राह" वीसीडी
केवल 25/– रुपये में

अपने बच्चों को अवश्य दिखाएं, भेंट तथा उपहार में देवें। आओ हम सब मिलकर महर्षि के सपनों का भारत बनाने में सहयोग करें। आओ हम सब देशभक्त बनकर पुन: विश्वगुरु भारत का सृजन करें।

सत्यार्थ मुक्तक

सत्यार्थ प्रकाश से

"मैंने भारत में आकर सच्चे हिन्दू धर्म का परिचय सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय से पाया है। क्योंकि धर्म से भटकने वालों के लिए यह पथ–प्रदर्शक है।" – *पादरी सी.एफ. एन्ड्रयूज*

सन्दर्भ:– *अति प्राचीन काल से ही पुण्यात्मा श्रद्धालु जनों के धार्मिक व्यवहार में ऋषियों की एक परम्परा चली आ रही है। प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान की समाप्ति पर "ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति:" का प्रयोग हम करते हैं। किन्तु, इसका प्रयोग करने वालों में से बहुत कम लोग ही इसका वास्तविक आशय समझते होंगे। महर्षि जी इसकी व्याख्या प्रथम समुल्लास में प्रस्तुत करते हैं। जिज्ञासु पाठक इस सत्यार्थ प्रकाश की ज्ञानसुधा से लाभ लेवें।* – सम्पादक

"तीन बार शान्तिपाठ का यह प्रयोजन है कि त्रिविधताप अर्थात् इस संसार में तीन प्रकार के दु:ख हैं– एक 'आध्यात्मिक' जो आत्मा, शरीर में अविद्या, राग, द्वेष, मूर्खता और ज्वर पीडादि से होता है। दूसरा 'आधिभौतिक' जो शत्रु, व्याघ्र, सर्पादि से प्राप्त होता है। तीसरा 'आधिदैविक' अर्थात् जो अतिवृष्टि, अवृष्टि, अतिशीत, अति उष्णता, मन और इन्द्रियों की अशान्ति से होता है। इन तीन प्रकार के क्लेशों से आप (ओ३म्= परमात्मा) हम लोगों को दूर करके कल्याणकारक कर्मों में सदा प्रवृत्त रखिए।

(प्रथम समुल्लास)

प्रथम पृष्ठ का शेष गुरुकुल कांगड़ी की ....

कांगड़ी में जब से पंजाब सभा ने अनधिकृत चेष्टा करते हुए दो संवैधानिक सभाओं को दूर करने का प्रयास किया है, उन सबके पीछे यही उद्देश्य छिपे हुए नजर आते हैं।

अभी तक पहले बिकी 144 बीघा भूमि का मामला सुलझ नहीं सका और उसको वापस लेने के लिए दिल्ली एवं हरियाणा सभा अपने कर्त्तव्य को निरन्तर निभाती चली आ रही हैं। किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की निरन्तर चलती हठधर्मिता के चलते उनमें अभी तक कुछ भी सफलता नहीं मिल सकी है। इस षड़यन्त्र की सूचना जैसे ही सभा को प्राप्त हुई, दिल्ली सभा के अधिकारियों की आवश्यक बैठक आयोजित हुई तथा इस विषय को सभा की अन्तरंग सभा में भी रखा गया। इसकी सूचना से सभी में व्यापक क्षोभ हुआ तथा सभी ने आचार्य बलदेव जी एवं सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी से कहा कि आप इस सम्बन्ध में कार्यवाहियां करें, हम सब आपके साथ हैं। इस सम्बन्ध में दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य ने कहा कि यदि इन ऐतिहासिक स्मारकों को यों ही किसी को हस्तांतरित कर देने लगे तो एक नई गलत परम्परा की शुरुआत होगी, जिसे रोकने के लिए हर आर्यसमाजी को प्रयास करना चाहिए।

बड़े दुख का विषय है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सब अधिकारी और उनसे सम्बन्धित सार्वदेशिक सभा (जिनको वे सार्वदेशिक सभा मानते हैं – श्री मिठाई लाल सिंह आदि) ये सब जानते–बूझते भी चुप क्यों हैं? आखिर इसका क्या कारण है? क्या यह माना जाए कि इन सभी का मौन समर्थन उन्हें प्राप्त है? खैर, जो भी हो, हमें अपना कर्त्तव्य पूरा करना है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि वह जमीन पूरे आर्यसमाज की सम्पत्ति है। कागजात की दृष्टि से वह चाहे वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, दिल्ली तथा हरियाणा सभाओं की साझी सम्पत्ति हो किन्तु वास्तव में वह समस्त आर्यसमाज की ही सम्पत्ति है।

शीघ्र ही वहां प्रतिनिधियों का एक दल भेजा जाएगा, जो इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट पेश करेगा। इसके बाद इस विषय में आगे की रणनीति तय की जाएगी।

आर्यसमाज के अनन्य नेता, निर्भिक संन्यासी, तपोनिष्ठ, शुद्धि आन्दोलन के नेता, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपोभूमि, जिसको पुण्य भूमि के नाम से जाना जाता है वास्तव में यह वह भूमि है जिस पर सर्वप्रथम गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की गई। कुछ समय बाद बाढ़ आ जाने के कारण से गुरुकुल को उस स्थान से परिवर्तित करके वर्तमान चल रहे परिसर में लाया गया था। उस ऐतिहासिक तपोभूमि जिस पर यह गुरुकुल वर्षों चलता रहा तथा आज भी उस भूमि पर जाने पर एक अभिन्न, अभूतपूर्व संस्कार उत्पन्न होते हैं।

आर्य सन्देश का विशेषांक : एक प्रतिक्रिया

आदरणीय महाजन जी,

सादर नमस्ते!

आर्य संन्देश का सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित विशेषांक मिला। रंग–बिरंगा कलेवर, सुन्दर संदेश तथा एक से बढकर एक आलेख रचनाएं । हार्दिक बधाई स्वीकारें।

आपने अपने संम्पादकीय में ठीक ही लिखा है कि सत्यार्थ प्रकाश एक वैचारिक मशाल है। सचमुच यह मशाल हमें वैदिक ऋषि के आवोभद्रा सूक्ति का स्मरण कराती है। आपका सम्पादन कौशल न केवल रचनाओं के प्रस्तुतिकरण में झलकता है, वैदिक पत्रकार तथा प्रतिष्ठित विद्वान श्री क्षितीश वेदालंकर की स्मृति को भी ताजा कर देता है जो कभी "हिन्दुस्तान दैनिक" तथा बाद में आर्य जगत का संपादन कार्यभार निर्वहन करते हुए लेखकों से अनुरोध करके रचनाएं आमंत्रित करते थे।

आपने उक्त विशेषांक में सत्यार्थ प्रकाश के भिन्न–भिन्न पक्षों पर आलेख संकलित कर अंक को एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना दिया है। वेदाचार्य डा. रधुवीर वेदालंकार प्रों रासा सिंह रावत, दयाराम पोद्दार, तथा वरिष्ठ पत्रकार बनारसी सिंह आर्य विद्वान डा. महेश विद्यालकार विश्वनाथ जी, डा. ज्ञान चन्द्र, चन्देश्वर शास्त्री, महात्मा चैतन्य मुनि आदि जहां दयानन्द की विरासत से लेकर वैचारिक मंथन द्वारा इस कालजयी ग्रंथ का आंकलन करते है, वहाँ प्रबुद्ध पत्रकार दत्तात्रेय तिवारी 'मेरा नाम पहले आर्य था, अब हिन्दु है।' की पंक्तियों में एक स्वस्थ वहस को जन्म देते हैं। काश, आर्य समाज महर्षि के सिद्धांतों के साथ विवेक एवं उदारता का यथा संभव समन्वय कर कृण्वन्तो विश्वआर्यम को हाइटैक पद्धतियों से जन–जन तक पहुँचा सके। मेरे लेख को आर्य संस्थाओं के अतिरिक्त हिन्दुत्व प्रचारक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के पत्र पत्रिकाओं ने सम्मान जनक ढंग से प्रकाशित किया है। जिस पर अनेक विद्वान पाठकों की मिश्रित प्रतिक्रियाएं मुझे मिली है क्या ही अच्छा हो 'सत्यप्रकाश ' पर आर्य तथा अन्य विचारधाराओं के विद्वानों की एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया जा सके। शायद संपादक जी ही इस दिशा में कुछ कर सकेंगे। पुन: बधाई और साधुवाद।

– डॉ० श्याम सिंह शशि
पद्मश्री, पी.एच.डी., डी.लिट्.
अनुसंधान, बी–4/245,
सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली–29

महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण के125वें वर्ष के अवसर पर

सार्वदेशिक आयोजन समिति के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी का सन्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के निर्वाण को 125 वर्ष पूरे हो गए। हम सबने मिल कर इस अवसर के लिए एक विशेष प्रचार की योजना बनाई। उस योजना में आप सभी की बहुत भागीदारी रही। इस पूरी योजना का उद्देश्य यह था कि हम महर्षि दयानन्द को किस प्रकार घर–घर पहुंचाएं, बच्चे–बच्चे को महर्षि दयानन्द के बारे में बता सकें। इसके लिए हर स्तर पर प्रयास किए गए। बड़े–बड़े अखबारों में विज्ञापन निकाले गए, लेख भी निकाले गए। जगह–जगह प्रभातफेरियां हुईं। घर–घर तक साहित्य वितरण किया गया। अनेक टीवी चैनलों पर स्वामी दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष का विज्ञापन निकाला गया। सड़कों के किनारे तथा आर्यसमाज के भवनों पर बड़े–बड़े होर्डिंग लगाए गए। छोटे–छोटे बैनर घरों तथा अन्य स्थानों पर लगवाए गए। स्कूटरों पर स्टेपनी कवर लगवाए गए जो आज भी जगह–जगह दिखाई देती रहती हैं। सड़कों के बीच में खम्बों पर बोर्ड लगाए गए जिससे कि ज्यादा से ज्यादा जनता को इसकी जानकारी मिल सके। दिल्ली में और अन्य स्थानों पर बच्चों की प्रतियोगिताएं कराई गईं और करवाई भी जा रही हैं। महामहिम राष्ट्रपति जी से जब इस एक वर्षीय योजना का उद्घाटन कराने का विचार किया गया था, उसके पीछे भी यही भावना थी कि यह वर्ष हर दृष्टि से एतिहासिक बने। दिल्ली सरकार ने इस वर्ष में पड़ने वाले स्वामी दयानन्द जी के जन्मदिवस के अवसर पर अपनी ओर से विज्ञापन भी प्रकाशित किए। यह भी खुशी का विषय है। पर केवल स्वामी दयानन्द का नाम और चित्र जाने मात्र से हम सबका उद्देश्य पूरा नहीं होता। महर्षि दयानन्द का जीवन प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है लेकिन कोई उसे पढ़े तब। इसीलिए सार्वदेशिक सभा द्वारा बनाई गई निर्वाण वर्ष आयोजन समिति की एक बहुत सुन्दर योजना यह थी कि बच्चों तक स्वामी दयानन्द जी का जीवन चित्रमय पहुंचाया जाए और साथ ही साथ कुछ ऐसी व्यवस्था भी की जाए कि वे उसको अवश्य पढ़ें। इसी के लिए 5 लाख रुपये की पुरस्कार योजना स्वीकृत की गई। मुझे बड़ा हर्ष है कि इस योजना ने पूरे देश में अपना स्थान बना लिया है और हजारों की संख्या में बच्चे इसे पढ़कर प्रश्नोत्तरी का प्रतियोगिता फार्म भरकर निरन्तर भेज रहे हैं। फार्मो के साथ में कुछ बच्चों के पत्र भी आ रहे हैं जिसमें उन्होंने इस योजना को बहुत अच्छा बताया है। मैं समझता हूं कि ये एक अच्छा अवसर है जब हम अधिकतम बच्चो तक महर्षि दयानन्द जी का जीवन बहुत सरलता से पहुंचा सकें। हम सबको इस अवसर पर महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र को अधिक से अधिक बच्चों तक पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए। हमारी कोशिश होगी कि शीघ्र ही टीवी पर भी कार्यक्रम प्रसारित हो सकें, ताकि प्रचार का कोई ऐसा क्षेत्र अछूता न रहे जिससे हम अधिकतम लोगों तक पहुंच सकते हों। इस योजना में प्रत्येक प्रान्त में एक–एक विशेष सम्मेलन मनाए जाने की बात भी थी। जम्मू का आयोजन हो चुका है छत्तीसगढ़ एवं महाराष्ट्र की तिथियां निश्चित हो चुकी हैं। उद्घाटन समारोह का आयोजन दिल्ली में हो ही चुका है। इस प्रकार अन्य प्रान्तों में भी सम्मेलन आयोजित होंगे। निश्चित रूप से ये सब उत्साह की बातें हैं।

एक वर्ष की समाप्ति में कुछ ही समय शेष है। हमें भव्य समापन समारोह भी दिल्ली में आयोजित करना है। उस अवसर पर एक वर्षीय कार्ययोजना में जिन महानुभावों ने बढ़चढ़कर भाग

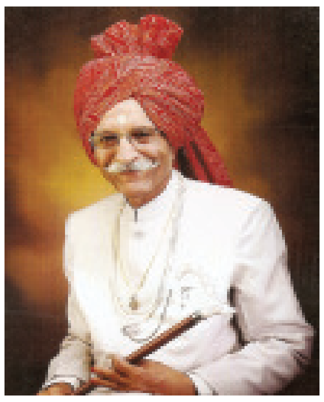

लिया है उनका सम्मान भी होगा।

आओ हम सब अपनी–अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में लग जाएं। 125वें वर्ष के जो लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, यदि वे पूरा करने में हम सफल रहे तो निश्चित रूप से आगे बड़ी योजनाओं को बनाने और उन्हें पूरा करने में हमें बल प्राप्त होगा। क्योंकि योजनाएं केवल बनाने और दिखाने के लिए तैयार नहीं की जाती, बल्कि उनके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बनाई जाती हैं।

– महाशय धर्मपाल

प्रचार यात्रा वृतान्त

साध्वी डॉ. उत्तमायति जी की वेद प्रचार यात्रा –3

दक्षिण तथा उत्तरी अमेरिका के देशों में कर रहीं हैं प्रचार

गतांक से आगे :–

7, 8, 9 जुलाई को शिकागों में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में शामिल हुई। 7 ता: को प्रात: यज्ञ से सम्मेलन प्रारंभ हुआ। मैंने भजन गाया। 7 को ही शाम को महिला सम्मेलन था मेरी अध्यक्षता में। अंत में अध्यक्षीय भाषण को लोगों ने खूब सराहा। आज के अभिभावक इतने व्यस्त हो गये हैं कि उन्हें यह नहीं पता कि बच्चों का लालन पालन कैसे होना चाहिये। फिर दोषारोपण हम नई पीढ़ी पर करते हैं कि आज का बच्चा आज्ञाकारी नहीं है, संस्कारी नहीं है। क्या कभी आपने संस्कार देने की कोशिश की है? मेरे पिता ने मुझे संस्कार दिये और मैं आज आपके सामने हूं। आप बस बचपन में अच्छे संस्कारों का बीज अपने बच्चों के कोमल हृदय में बो दीजिए, उचित समय पर जब उस बीज को हवा–पानी मिलेगा तो वह स्वत: प्रस्फुटित होकर एक सुन्दर वृक्ष का रूप धारण कर लेगा, जिसमें समाज कल्याण, देशभक्ति व अपनी संस्कृति के सुन्दर फल लग जाएंगें। आप बीज डालकर तो देखियें। भाषण तो काफी था पर उसका कुछ अंश इस प्रकार था। भाषण के पश्चात् भारत से आए एक बुजुर्ग आशीर्वाद देते हुए बोले आज यदि मैं जज होता तो आपके भाषण पर 100 में से 110 नम्बर देता। दूसरे दिन डॉ. सोनीजी बोले बहन जी! कल के आपके भाषण ने तो बहनों में आपकी डिमांड बढ़ा दी है, सब कह रही हैं कम से कम 6 महिने के लिए साध्वी जी को यही रोक लो। बहुत ही सुन्दर

सम्मेलन रहा। 10 ता: को मैं वापिस गुयाना में आ गई। मैंने गुयाना में एक और ऐतिहासिक कार्य किया, वहां मैने सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की स्थापना की तथा उसकी सेक्रेट्री नियुक्त करके आई श्रीमती जीना दास को, जो कि आर्य समाज की काफी कर्मठ कार्यकर्ती है। 5 से 12 अगस्त 08 तक आर्य वीर वीरांगना शिविर लगा एनमोर आर्य समाज में। पर भारत से बिल्कुल भिन्न था। यहां शारीरिक व्यायाम आदि को ज्यादा महत्व नहीं देते हैं। मैंने वीरांगनाओं का व्यायाम, सूर्यनमस्कार, तथा जूडो–कराटे सब सिखाए तथा बौद्धिक कक्षा में सत्यार्थ प्रकाश के तीन सम्मुलास बताए। अन्तिम दिन सत्यार्थ प्रकाश के प्रश्नोत्तरी पेपर लिए। समापन पर जब वीरांगनाओं का योग प्रदर्शन जूडो प्रदर्शन आदि हुआ तो सब कहने लगे –This was first time in Guyana history. बाद में यज्ञ कराके सबको यज्ञोपवीत भी दिलवाया तथा आर्य वीरों को शपथ दिलवाई – No smoking, No drink, No meat. सभी ने हाथ उठाकर शपथ ली। यहां एक बहुत खराबी है कि लोग मीट आदि बहुत खाते हैं तथा बेहद शराब पीते हैं। इसलिए आर्यवीरों को उक्त शपथ दिलाई।

राखी का त्योहार भी यहां सभी हिन्दू बहुत शौक तथा धूमधाम से मनाते हैं। सभी भाइयों के हाथ में राखी बंधी थी। कई बार तो मुझे लगता था जैसे मैं मिनी इंडिया में बैठी हूँ। टी.वी. पर राखी के गाने तथा पुरानी पिक्चर 'छोटी बहिन' दिखाई गई। एक बार तो मुझे भी अपने भाइयों की याद आ गई। जुलाई के अन्तिम सप्ताह से तीन सप्ताह तक गुयाना के दुसरे स्थान विन्डसर फारेस्ट में कक्षाएं लीं तथा दो बार रात्रि में मैंने यज्ञ व प्रवचन भजन आदि भी सुनाए। वहां भी महिलाओं,बच्चों व पुरुषों ने बहुत ही शौक से भजन सीखे, योग सीखा व हिन्दी सीखी। वहां की महिलाएं इतनी अधिक प्रभावित हुई कि मुझे गुयाना का 'केचूर फाल' दिखाने ले गई, केचूर फाल बहुत ही खूब सूरत जगह थी। कहते हैं संसार का सबसे बड़ा सिंगल ड्रॉप फाल है काफी ऊँचाई से गिरता है। बहुत आनन्द आया, मैंने बहुत सारे फोटो भी लिए। 15 सितम्बर को हम केचूर फाल देखने गये थे। इसके लिए स्पेशल छोटा प्लेन चलता है 15 सवारियों वाला तथा शहर में ही छोटा एयर पोर्ट बना रखा है नाम है ओगल एयर पोर्ट । इस प्रकार गुयाना के एक राज्य जार्ज टाउन, जो कि गुयाना की राजधानी है में अपना कार्य पूर्ण करके मैं17 सितम्बर को गुयाना के दूसरे राज्य बरबीस में आ गई। नवम्बर तक मुझे यहां कार्य करना था। बरबीस के विभिन्न शहरों में 15–15 दिन प्रचार चलता रहा। प्रथम 15 दिन कॉजी में रही। आर्य समाज के पीछे ही बहुत सुन्दर छोटा सा दो कमरों के साथ रसोई बाथरूम आदि थे, वहां रही। प्रात: कई सनातन मंदिरों में प्रवचन भजन, शाम को चार से पाँच बजे योग कक्षा, शाम को 6 बजे से आठ बजे तक अन्य मंदिरों व आर्यसमाजों में कार्यक्रम चलते रहे। यहाँ आने से पूर्व ही बर्बीज सैन्ट्रल आर्यसमाज के प्रधान पं. धनेसर जी व सेकेट्री श्री डॉ. रमेश सुग्रीभ ने पूरे कार्यक्रम के हर दिन के हिसाब से पहले ही पत्रक छपवा कर लोगों मे बाँट दिये थे।

– क्रमश:

दिल्ली प्रदेश प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा
बिहार बाढ़ पीड़ितो को कम्बल वितरण

दिल्ली प्रदेश प्रान्तीय आर्य महिला सभा की तरफ से बिहार बाढ़ पीड़ितो की सहायतार्थ दिल्ली से आर्यसमाज कीर्तीनगर से दो बहने श्रीमती प्रकाश कथूरिया और श्रीमती सुषमा सेठ और रानी बाग आर्यसमाज से श्रीमती ईश्वर रानी महता तथा राजौरी गार्डन से श्री धर्मपाल जी (सेवक) पटना से तीन सौ किलोमीटर दूर मधोपुरा गांव में 1400 कम्बल स्वयं बाँट कर आई तथा उन से मिली और बाते भी की वह लोग जिन का सब कुछ बाढ़ में बह गया था। प्रकृति का प्रकोप किसी को नही बकस्ता। वह लोग रो–रोकर अपना हाल बता रहे थे कि हमारे पास कुछ नहीं बचा है और कोई काम धंधा भी नही हैं पैसा भी नहीं है जिससे हम कुछ कारो बार कर सके। उनकी इस कष्ट की घड़ी में हम सब मानव मात्र का कर्तव्य बनता है कि हम उनकी कुछ सहायता करें। उस कार्य के लिए प्रान्तीय महिलाये पीछे नही है। उनसे जो कुछ बन पाया उनकी सहायता की। महापुरुषों का कहना है कि जो हाथ दुआ के लिए उठते है उन से वह हाथ अच्छे है जो सेवा करते है। नर सेवा नारायण सेवा।

यह काम श्रीमती शकुन्तला दीक्षित अध्यक्ष (प्रा.आ. म.सभा), श्रीमती शशिप्रभा आर्या महामंत्री (प्र0 आ0 म0 सभा) की अध्यक्षता में किया गया था।

– सुषमा सेठ,
उपप्रधान (प्र0आ0म0 सभा)

सुनो आर्यो!

जगतगुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान।
देशभक्त धर्मात्मा, दयासिंधु गुणवान।।

दया सिंधु गुणवान, तपस्वी–वेदाचारी।
मानवता के पुंज, साहसी परोपकारी।।

जगतहितकारी संत, वेद मर्यादा पालक।
मान रहा है विश्व, गुरुवर थे युग नायक।।

सुनोआर्यो! बात अब, सभी लगाकर ध्यान।
वेदों के पंथपर चलो, चाहो यदि कल्याण।।

चाहो यदि कल्याण, बनो त्यागी, तपधारी।
स्वार्थ भाव दो त्याग, बनों तुम परोपकारी।।

करो वेद प्रचार, जगत को स्वर्ग बनाओ।
दूर अविद्या करो, विश्व का कष्ट मिटाओ।।

– पं0 नन्दलाल निर्भय
ग्राम+पत्रालय बहीन (पलवल)
जिला– फरीदाबाद (हरियाणा)

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 11,12,13 फरवरी, 2010 को मनाया जाएगा। आर्यजन उपरोक्त तिथियों को अभी से नोट कर लें और इन तिथियों में अन्य कोई कार्यक्रम न रखकर ऋषि जन्मभूमि टंकारा पहुंचकर ऋषि के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें।

– रामनाथ सहगल, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
www.delhisabha.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में
प्रचार हेतु सामग्री उपलब्घ

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष से सम्बन्धित प्रचार सामग्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साहित्य बिक्री केन्द्र पर उपलब्ध है। प्रचार सामग्री सभी कार्यदिवसों में दोपहर 12 से रात्रि 8 बजे के मध्य किसी भी समय प्राप्त की जा सकती हैं।

उपलब्ध सामग्री एवं मूल्य सूची

क्र.सं.	नाम वस्तु	मूल्य
1.	ओ३म् ध्वज (छोटा)	10/–
2.	ओ३म् ध्वज (बड़ा)	20/–
3.	125वां निर्वाण वर्ष बैनर	20/–
4.	दैनिक यज्ञ गुटका	400/– सैकड़ा
5.	घड़ी (बड़ी)	300/–, 100/–
6.	घड़ी (छोटी)	75/–
7.	टेबल घड़ी	50/–
8.	पॉकेट कैलेण्डर (दो डिजाइन)	60/– सैकड़ा
9.	सोने की गिन्नी (5 ग्रा.)	बाजार रेट पर
10.	चांदी के सिक्के (10ग्रा.)	बाजार रेट पर
11.	होर्डिंग एवं लोगो सीडी	10/–
12.	सत्य की राह (वीसीडी)	25/–
13.	सत्यार्थ प्रकाश (ओडियो सीडी)	15/–
14.	महर्षि दयानन्द फ्रेम्ड चित्र (10'' ×12'')	350/–
15.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (8''×10'')	40/–
16.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (5''×7'')	20/–
17.	महर्षि दयानन्द के लेमिनेटिड चित्र (3''×5'')	15/–
18.	नेम स्लिप्स (18×1)	5/–
19.	शगुन लिफाफे	200/– सैकड़ा
20.	पोल स्टीकर (निर्वाण वर्ष)	150/– सैकड़ा
21.	प्लेन स्टीकर (निर्वाण वर्ष)	300/– सैकड़ा
22.	दीपावली शुभकामना कार्ड (लिफाफे सहित)	750/– सैकड़े
23.	स्कूटर स्टेपनी कवर	20/–
24.	ओ३म् स्टीकर (छोटा)	150/– सैकड़ा
26.	वेद ईश्वरीय ज्ञान (लघु ट्रैक्ट)	250/– सैकड़ा

समस्त आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण संस्थाओं, आर्य व्यापारिक संस्थानों से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द जी के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में अधिकाधिक प्रचार कार्य करें, जिससे जन सामान्य के साथ–साथ सरकार को भी महर्षि दयानन्द जी के विषय में जानकारी प्राप्त हो तथा वे भी स्वामी जी के निर्वाण वर्ष पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। प्रचार सामग्री मंगाने के लिए **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001, दूरभाष: 011–23360150, 23365959, टेलिफैक्स : 011–23343737, Email : aryasabha@yahoo.com; Website : www.delhisabha.com** पर सम्पर्क करें। ट्रांसपोर्ट/डाक द्वारा समान भेजने का व्यय पृथक देय होगा।

– विनय आर्य, महामन्त्री

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में 5, 10 एवं 20 किलो के पैक में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

डाक/ट्रांसपोर्ट से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

– संयोजक, विक्रय विभाग

चारों वेदों का सम्पूर्ण वेद-भाष्य

(हिन्दी 4 व 14 खण्डों एवं दो विभिन्न आकारों में) **मात्र 1500/-रु०**

(अंग्रेजी 22 खण्डों में) **मात्र 2000/-रु०**

डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।
प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ-प्रकाश

प्राप्त करें मात्र 25/- में

(2500/- रुपये सैंकड़ा)
सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर में प्रकाशित
डाक-व्यय पृथक् से देय होगा।
प्राप्ति-स्थान : - वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

संस्कृत शिक्षा ऐच्छिक बनाने का विरोध

हरियाणा सरकार द्वारा संस्कृत शिक्षा की अनिवार्यता को समाप्त करते हुए एच्छिक विषय करने का विरोध।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 12.06.09 में यह जानकारी सभा उपप्रधान आचार्य बलदेव जी द्वारा दी गई कि हरियाणा सरकार द्वारा कक्षा 10 के पाठक्रम में से संस्कृत विषय को एच्छिक विषय करने की घोषणा की जा रही है।

इस पर समस्त सदस्यों ने इस घोषणा पर विरोध व्यक्त किया और शासन को शिक्षा विभाग पदाधिकारियों को इससे अवगत कराया गया है। इस पर निर्णय न होने पर आन्दोलन की चेतावनी दी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं हरयाणा सर्वखाप पंचायत के तत्त्वावधान में

वीर सोनू शहीद महासम्मेलन

स्थानः ग्राम करौंथा, जिला रोहतक (हरयाणा)

रविवार दिनांक 12 जुलाई, 2009 समय : प्रातः 9 से 12 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर आर्यवीर शहीद सोनू को श्रद्धांजलि देने तथा नामधारी संत रामपाल को पुनः करौंथा आश्रम में आने से रोकने के लिए भारी संख्या में पधारें।

निवेदक :– सर्वखाप पंचायत हरयाणा

जातिबोधक शब्द के स्थान पर "आर्य" लगाने का निश्चय

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली में वेद प्रचार मंडल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली के आग्रह एवं प्रेरणा से निम्न महानुभावों ने जाति बोधक शब्द की अपेक्षा "आर्य" शब्द अपने नाम के साथ लगाने का संकल्प लिया।

1. **श्री धर्मपाल गुप्ता**, कोषाध्यक्ष, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ अब **श्री धर्मपाल आर्य** के नाम से जाने जाएंगे।
2. **श्री कृष्ण देव मदान**, संरक्षक आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली अब **श्री श्रीकृष्ण देव आर्य** के नाम से जाने जाएंगे।
3. **श्री ओम प्रकाश मनचन्दा**, प्रधान आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली अब **श्री ओमप्रकाश आर्य** के नाम से जाने जाएंगे।

सभी सज्जनों से निवेदन है कि वे इन्हें आर्य नाम से ही पुकारें तथा अन्य सज्जनों को भी अपने नाम के साथ आर्य लिखने के लिए प्रेरित करें।

– भजन प्रकाश आर्य, प्रधान, वेद प्रचार मंडल उ0प0 दिल्ली

प्रवेश सूचना

आप अपनी सन्तानों को उत्तम शिक्षा, शुभसंस्कार, सदविचारों की पराकाष्ठाओं से युक्त सुयोग्य, चरित्रवान नागरिक,विद्वान, धर्मात्मा, मातृ–पितृ एवं ईश्वरभक्त, तथा राष्ट्र हितकारी सुसन्तान बनाना चाहते है, जो कि निम्न कलाओं से परिपूर्ण हों, तो आज ही सम्पर्क करें।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तीनों भाषाओं का दैनिक सम्भाषण व्यवहार। विज्ञान (रसायन, भौतिक, जीव–विज्ञान) की प्रयोगात्मक व्यवस्था। प्राचीन (वेद, व्याकरण, उपनिषद्, दर्शनादि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्गमय) एवं आधुनिक (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नैतिकशिक्षा, आदि) सभी विषयों का समन्ययात्मक शोधपूर्ण अध्ययन, योग्य एवं कुशल आचार्यो द्वारा कराया जायेगा। उच्च प्रशासनिक (आई.ए. एस.,आई. पी.एस., पी.सी. एस. आदि विभिन्न) परीक्षाओं का प्रतिस्पर्धात्मक अध्ययन एवं पाठ्यक्रम कक्षा छठी से। समाज में कुशलता पूर्वक जीवन यापन के लिए बौद्धिक प्रशिक्षण के साथ साथ सदाचार, शिष्टाचार, सभ्यतापूर्ण, अनुशासनयुक्त कुशल सैनिक के सभी शिक्षण प्रशिक्षण का अध्ययन कुशल प्रशिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। कम्प्यूटर की सर्वांगीण प्रशिक्षण की व्यवस्था। उपर्युक्त सभी विषयों के शिक्षण –प्रशिक्षण का कार्य कुशल एवं योग्य आचार्यो के निर्देशन में कराया जायेगा। सम्पर्क करें– *– आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री (कुलपति)*

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल (ब्रह्माश्रम) संस्कृत महाविद्यालय राजघाट (नरौरा) बुलन्दशहर, (उ0 प्र0) फोनः 05734222306

प्रवेश– सूचना

विगत वर्षो की श्लाघनीय उपलब्धियों के साथ गुरुकुल का नवीन शैक्षिक सत्र 1 जुलाई 2009 से प्रारम्भ होने जा रहा है। प्रबन्ध सुविधा को दृष्टिगत करते हुये शिक्षण क्रम यहाँ तीन वर्गो मं विभक्त है। 1. प्रवेशिका विभाग, 2. मध्यमा विभाग, 3. स्नातक विभाग।

भोजन शुल्क प्रतिमास 500/– है अन्य अपेक्षाओं की पूर्ति पृथक व्यय से सम्भव है जिसका कि अतिरिक्त व्यय के रूप में सामान्यतया 100/– देय होगा। निराक्षित तथा मेधावी छात्रों को समस्त शैक्षिक सुविधाये चयन के आधार पर निःशुल्क देय होगी। प्रवेश कक्षा पात्रता के आधार पर निर्धारित की जाएगी। प्रवेशार्थी शीघ्र सम्पर्क करें – *– सूर्यदेव शास्त्री, प्राचार्य*

गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर, तिलहर, शाहजहाँपुर (उ0 प्र0)

दूरभाष : 05841–692071

उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिलों में आर्य समाज का प्रचार

पं0 उम्मेद सिंह विशारद वैदिक पुरोहित व भजनोपदेशक उत्तराखण्ड में देहरादून व पर्वतीय जिलों में निःस्वार्थ भाव से आर्य समाज के प्रचार में निरन्तर लगे हुए हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में चार सौ किलोमिटर दूरी पर कार्य करना अति जोखिम का कार्य है। अत्यन्त कठिन व परिश्रमी कार्य होते हुए भी महर्षि दयानन्द के दिवाने में वर्तमान में पौड़ी गढ़वाल में थलीसैण जखणीखाल, कालीमठ चोबटाखाल, बावई रूद्रप्रयाग, चमोली, चोलीसैण व उत्तरकाशी में नई आर्य समाजें खोली है तथा पशुबलि जहां उत्तराखण्ड के मन्दिरों में भैंस व हाजारों बकरों को काटा जाता है, इसको रोकने में भी सफल हो रहे हैं। उक्त स्थानों में पशुबलि बन्द करने के लिए स्थानीय जनता से प्रण कराया गया और पशु बलि कई मन्दिरों में बन्द हो गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की तपस्थली उत्तराखण्ड में, देवी देवताओं के नाम पर भैंसे व बकरे काटना, शराब का घर–घर में सेवन, जाति–पाति, छुआछूत व अनेक कुरीतियां फैली हुई हैं। इस क्षेत्र में प्रचार करके गांव–गांव में आर्य समाज खोलना बहुत आवश्यक है।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली

प्रधान : श्री ओमप्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री अरुण आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री विनय भूषण गुप्ता

आर्यसमाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर नगर (पंजाब)

प्रधान : डॉ. इन्द्रकुमार शर्मा
मन्त्री : श्री राजकुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष : श्री मुलखराज शर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी लिए लॉगऑन करें

www.swamidayanand.com

शोक समाचार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री

श्री अरुण प्रकाश वर्मा के मामाश्री का निधन

आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी के पूज्य मामा श्री केदारनाथ आर्य का रविवार 21 जून, 2009 को नोएडा में 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे स्वयं और उनका पूरा परिवार आर्य संस्कारों से ओतप्रोत रहा। उनके परिवार में दैनिक यज्ञ काफी समय से हो रहा है। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी, एक सुपुत्र और चार सुपुत्रियों का भरा–पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री वेद प्रकाश चावला का निधन

आर्यसमाज रोहतास नगर शाहदरा के कर्मठ सदस्य श्री वेद प्रकाश चावला जी का गत दिनों निधन हो गया। वे लगभग 84 वर्ष के थे। जिला मुजफ्फरगढ़ (पाकिस्तान) में आर्य समाजी परिवार में जन्में तथा भारत विभाजन के बाद वे दिल्ली आ गए तथा रामजस स्कूल में अध्यापन कार्य करते रहे। सेवानिवृति के बाद उन्होंने अपना जीवन आर्यसमाज की सेवा में समर्पित कर दिया। वे दैनिक यज्ञ करते थे। आर्यसमाज के प्रत्येक उत्सव में परिवार सहित भाग लेते थे।

श्री चावला जी अपने पीछे अपनी पत्नी, तीन सुपुत्रों एवं दो सुपुत्रियों का भरा–पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती सुशीला देवी किंगर का निधन

वैदिक सत्संग मंडल, पुराना राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की संस्थापक सदस्य एवं प्रधाना श्रीमती सुशीला देवी किंगर जी का 27 मई, 2009 की रात्रि हो गया। वह जीवन पर्यन्त आर्यसमाज की विचारधारा को आगे बढ़ाने में लगी रहीं। उनकी सन्तानें भी माताजी के पद्चिह्नों पर चलते हुए प्रचार कार्य में लगए हैं।

श्री नरेन्द्र पतिरे का निधन

आर्यसमाज सोहनगंज, दिल्ली–7 के संरक्षक, स्वतन्त्रता सेनानी श्री नरेन्द्र पतिरे का गत 17 जून, 09 को निधन हो गया।

श्री सन्तोष गर्ग को पितृशोक

आर्यसमाज सन्देश विहार, दिल्ली के संरक्षक श्री सन्तोष गर्ग के पूज्य पिता लाला रूपचन्द गर्ग का गत दिनों निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

22 जून, 2009 से 28 जून 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२००९-२०११
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २५/२६-०६-२००९
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२००९-११
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र आपके बच्चों को मिल सकते हैं

5,00,000 रु० तक के इनाम

दिल्ली सभा कार्यालय – 15, हनुमान रोड नई दिल्ली से

आज ही मंगवाएं

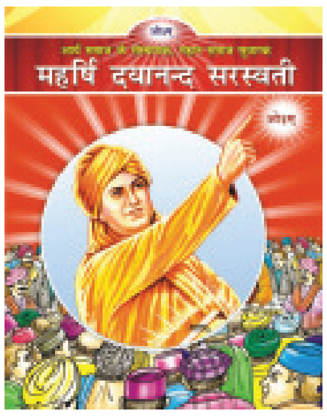

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी में तैयार कराई गई हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को बच्चों तक पहुंचाने के लिए यह एक सुविचारित योजना है। इनको बच्चों तक पहुंचाने के लिए कुछ सुझाव निम्न हैं :–

1. आर्यसमाज के आयोजनों पर बच्चों को निःशुल्क वितरण करें।
2. निकटवर्ती विद्यालयों में जाकर इस योजना के बारे मे बताएं तथा उन्हें खरीदने के लिए प्ररित करें।
3. अपने पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर जैसे – बच्चों का जन्मदिन, विवाह, वर्षगांठ के अवसर पर आने वाले बच्चों को भेंट करें।
4. बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाकर पुरस्कार के रूप में इनका वितरण करें।
5. जो आर्यसमाज के विद्यालय संचालित कर रहे हैं, वे प्रत्येक बच्चे तक इस कॉमिक्स को अवश्य ही पहुंचाएं।

विशेष नोट :

आवश्यक नहीं कि इनामों के लिए प्रविष्टियां अलग–अलग भेजी जाएं। आप चाहें तो कई प्रविष्टियां एक साथ भेज सकते हैं।

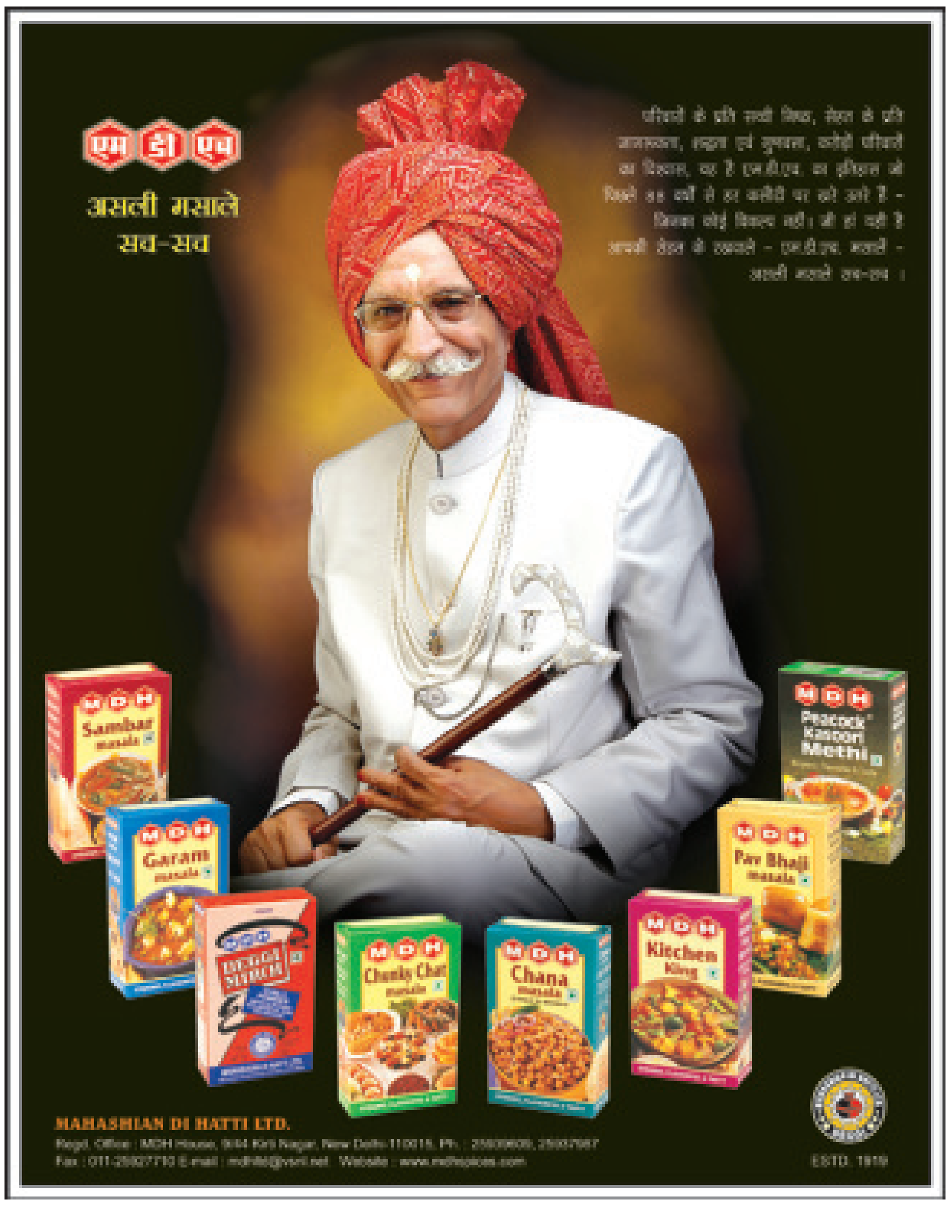

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर